स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विद्यापीठ, नांदेड के मानव्य विद्या शाखांतर्गत हिंदी विषय में पीएच.डी उपाधि हेतू प्रस्तुत

शोध प्रबंध का प्रारुपण

:: अनुसंधान विषय ::

“२१ वी सदी के जीवनीपरक उपन्यासों का अनुशिलन ”

शोधकर्ता

बोलचटवार नागेश दिगांबर
स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विद्यापीठ,
नांदेड

शोध-निर्देशिका

प्रा.डॉ.प्रतिभा येरेकार
सहयोगी प्राध्यापिका एवं हिंदी विभागाध्यक्ष,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
धर्माबाद जि.नांदेड

†¯Ö»Ö -2016

" २१ वी सदी के जीवनी पर उपन्यासों का अनुशीलन "

प्रस्तावना :-

उपन्यास नये युग की नयी अभिव्यक्ति का नया रुप है | साहित्य के उद्‌भव के सम्बन्ध में यह एक अखंड सत्य है कि वह व्यक्ति और युग के शाश्वत और सामाजिक रसायन की निष्पाति होती है | उसी सामाजिक रसायन को प्रस्तुत करने का संशक्त माध्यम उपन्यास है |

२१ सदी मे साहित्य की सभी विधाओं से श्रेष्ठ विधा उपन्यास है | साहित्य के उन्नयन और विस्तार मे भारतीय उपन्यासों ने पर्याप्त योगदान दिया है | जीवन और जगत की प्रस्फुट और सर्वांगिण अभिव्यक्ति जितनी उपन्यासों में परिलक्षित होती है, उतनी साहित्य की किसी अन्य विधा में दिखाई नहीं पडती | उपन्यास मानव-जीवन की जटिलतम स्थितियों, अनुभूतियों, विचारों और मान्यता ओं का जो रुप व्यक्त करता है, वह वास्तविक होता है, जीवन से सम्बधित होता है |

साहित्य की विभिन्न विधाओं में विविध शैलियों के माध्यम से जीवन की ही व्याख्या होती है | अत: उपन्यास साहित्य जीवन के विविध रंगो को व्यापक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत कर मानवीय चरित्रों को पूर्ण करने का दायित्व निभाता है | मानव - जीवन के विभिन्न क्षेंत्रो के विस्तार पूर्वक वर्णन का जितना अवकाश उपन्यास में मिलता है, उतना अन्य किसी साहित्यीक विधा में नही | इसी कारण मुंशी प्रेमचन्द ने उपल्यास को " जीवन का वास्तविक चित्र " माना है | मानव जीवन के विभिन्न पक्षों का यथार्थ चित्र उपस्थित करने के लिए उपन्यास साहित्य का क्षेत्र उपेक्षाकृत अन्य साहित्यिक रुपों से अधिक उपयुक्त है | उपन्यास समय-समय पर अन्य अनेक

सहयोगी विधाओं के गुणों को अपनाता है अतः उसमें नाटक, इतिहास, जीवनी तथा निंबध की मुल विशेषताओं को भी देखा जा सकता है |

उपन्यास यथार्थ जीवन की संवेगात्मक अभिव्यक्ति है | यह मात्र जीवन की ही अभिव्यक्ति नहीं, अपितु जीवन का मुल्याकंन, आलोचना एवं टिप्पण भी है | उपन्यासकार जीवन की बदलती मान्यताओं के आधार पर नए जीवन मूल्यों की स्थापना कर जीवन का मूल्याकंन करता है | हिन्दी उपन्यास लेखन के विभिन्न स्तर हैं, जिसमें सामाजिक, राजनैतिक, ऑचलिक, ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक, रोमांटिक आदर्शोन्मुखी और मंनोरजनकारी इन सभी विषयों को लेकर लेखन हो रहा है | उसी तरह से जीवनी पर उपन्यासों की सृजना हुई है |

उपन्यास और जीवनी दो स्वंतत्र्य विधाएँ है | उपन्यासकार अपने चरित्र मे पुर्ण स्वतंत्र है तथा अपने पात्रों के चरित्र का स्वयं निर्माण करता है वह अपने पात्र और घटनाओं का स्वयं भाग्य विधाता है | दूसरी और जीवनीकार इस दृष्टि से स्वतंत्र्य नही है उसे प्राप्त तथ्यों के आधार पर ही अपने चरित्र नायक की अन्तर- बाह्य स्थितियो का चित्रण करना पडता है | जीवनीपरक उपन्यासों में जहाँ एक और उपन्यास के तथ्यों का समावेश रहता है वही दुसरी ओर किसी के जीवन की यथार्थपरक घटनाओं का आधार भी आवश्यक होता है | इस प्रकार जीवनीपरक उपन्यास में जीवनी और उपन्यास के तत्वों का मिलन होता है | हिंदी-उपन्यास के क्षेत्र में अब जीवनीपरक उपन्यास को एक नई विधा के रुप में स्वीकार किया जाने लगा है, जिससे जीवनी परक उपन्यासों की और सराहनीय दृष्टि से देखा जाने लगा है |

२१ वी सदी के पूर्वे जीवनीपरक उपन्यासों के रचनाकारों में रांघेय राघव, अमृतलाल नागर, इकबाल बहादूर, देवसरे, चतुरसेन शास्त्री, भगवतीशख मिश्रा, वृन्दावनलाल वर्मा, हजारीप्रसाद द्विवेदी आदि महत्वपुर्ण है | २१ वी सदी में विभिन्न

रचनाकारोंने अपना योगदान हिन्दी के जीवनीपरक उपन्यास साहित्य मे दिया है |

•ÖÃÖ -

मैत्रेयी पुष्पा, सुधाकर अदीब, राजेन्द्र रत्नेश, शैलेश मटीयाली, प्रतिभा राय, निलय उपाध्याय, कृष्णा सोबती आदि

जीवनीपरक उपन्यास किसी की जीवनी का पुन:निर्माण है और जब पुन: निर्माण होता है, तब वह सोदेश्य ही होता है | उस सोदेश्य के चिंतन-मनन हेतू तथा जीवनीपरक उपन्यास में निहित मानव मुल्यों से उत्साहित एवं प्रेरित होकर ही प्रस्तुत अनुसंधान का विषय निर्धारित हुआ है |

विषय - प्रेवश :-

भारत की तपोभूमी पर ईश्वर के अवतार औंर देवों के आगमन ये यहॉ का परिवेश दिव्य रुप में विकसीत होता रहा हैं | उनके जीवन-चरित्र, संवाद और उद्‌बोधन से जन-मानस को गतिशिल रहने की उर्जा मिलती रही हैं | मानव-जीवन के सहज-विकास, वैज्ञानिक उन्नती और गतिशील रहने के लिए जिन दर्शनों का अभ्युदय हुआ है उस में संत, ऋषी, आचार्य और महान आदर्श व्यक्ती चरित्रें का ही महान योगदान रहा है | संतो ने ही मानव मात्र को मार्गदर्शन किया है और उन्हीं आदर्श चरित्रों का जीवन चित्र हम जीवनी के माध्यम से जीवित या प्रेरक के रुप में हम अपने जीवन में स्थान देते हैं |

जीवनी परक उपन्यासों में इन्ही प्रसिध्द चरित्रों की जीवनियों को लोाकेपयोगी बनाते है मनोविज्ञान ने सिध्द किया है की व्यक्ति के किसी भी व्यवहार के पीछे कोई -

न - कोई प्रेरक तत्व रहता है | इसी चालक तत्व के कारण व ह कार्य करने का दृढ संकल्प कर लेता है |

२१ वी सदी में समस्या ओं की कोई कमी नही है | मनुष्य के भौतिक सुविधाओं की तो भरमार है लेकिन आधुनिक युग मे कुछ मानसिक कमिया जाकि मनुष्य के प्रेरक तत्व आन्तरिक अशांतता, अकेलेपन की भावना, कौटुंबिक बिखरते सम्बध स्त्रियों की मानसिकता, शारीरिक अवहेलना, समाजिक विषमता, शोषन, धार्मिकता, कर्मकांण्ड इस सभी सवालों का जवाब और इन समस्याओं का समाधान सिर्फ उपन्यासो में लेखकीय कल्पना के पंखो से और जीवनियों की यथार्थता से आज की इन सभी समस्याओंका समाधान या उस आदर्श चरित्रे के जीवन मे आए संघर्षमय स्थितियों को परखकर वे आदर्श चरित्र उस परिस्थियों का सामना उनहोंने कैसे किया इसका चित्रण रचनाकारोंने जीवनीपरक उपन्यासो के माध्यम से किया है |

हमारे भारत वर्ष में अनेक संत, ऋषी, महान, आचार्य हो चूके है और हमारे भारतीय संस्कृती यह दिपस्तंभ की तरह है | आज भी २१ वी सदी के लोंग भारतीय संस्कृती का गुणगान गाते दिखाई देते है | वह किसी लिए तो आदर्श चरित्रों के जीवन चरित्तात्र के देखकर आज भी लोग राम को नही मानने वाले रामराज्य की इच्छा करते दिखाई देते है | राम जैसे आदर्श राज्यकर्ता हो ऐसी कामना करते है और कृष्ण जैसे महान जगतगुरु तुलसी जैसे रामभक्त, सूर जैसे कृष्णभक्त, कबीर जैसे समाजसुधारक, कालीदास जैस महाकवी, तानसेन जैसे महान गायक, जाणक्य जैसे चतूर नीतिज्ञ, रानी लक्ष्मीबाई जैसे विरागंणा, गोरखनाथ जैसे महानयोगी, आदि, अनेको प्रकार के चरित्रो का चित्रण आजके हिन्दी जीवनीपरक उपन्यास साहित्य में किया जा रहा है | आज के आधुनिक मानवीय समस्याओं का समाधान और पौराणिक बिखरते मूल्य, सामाजिक अधपतन, राजनैतिक भ्रष्टाचार, स्त्रियों के प्रति

दृष्टीकोण और उनकी समस्योंका मार्गदर्शन, प्रेरणा एवं इन सभी का दर्शन सिर्फ आदर्श चरित्रो की जीवन चरित्रें को अध्ययन से हो सकता है अत: इस जीवनीपरक साहित्यकों रचनाकारों ने उपन्यासों के माध्यम से पुरा किया है | इस लिए जीवनीपरक उपन्यास का अनुशीलन अपना अलग महत्व रखता है |

विषय चयन की प्रेरणा :-

स्नातकोत्तर से ही मुझे जीवनी परक उपन्यास पढने की जिज्ञासा थी | मैने अमृतलाल नागर कृत खंजन नयन तथा मानस का हंस इन दो रचनाओं को पढा तभी मन मे ईच्छा उत्पन्न हुई कि यदि भविष्य में शोध-कार्य करने का अवसर मिला तो जीवनी परक उपन्यासो पर ही करुंगा | मेरी जिज्ञासा को प्रोत्साहित करने का कार्य मेरे मित्रवत् गुरुवर्य डॉ.प्रकाश शिंदे को भी जाता है | जिन्होंने मुझे इस विषय के प्रति आकर्षित किया " २१ वी सदी के जीवनी पर उपन्यासो का अनुशीलन " इस विषय पर मेरी शोध - निर्देशिका डॉ.प्रतिभा येरेकार के साथं विचार -विमर्श एवं चर्चा के बाद ही मैं यह विषय निश्चित कर पाया | शोध शीर्षक पाकर मुझे मन - ही - मन आत्मिक संतुष्टी एवं शोध के लिए प्रेरणा मिली |

महत्व एवं प्रांसगीकता :-

जीवनीपरक उपन्यास गद्य साहित्य की विशिष्ट प्रामाणिक विधा है, इस में दृष्टी, कल्पना प्रवनता, ऐतिहासीक शैली, आलंकारिकता, बिम्ब सौन्दर्य, प्रतीक योजना और यदा-कदा मिथक दर्शन का भी अभूतपूर्व योगदान रहा है इस लिए हिन्दी साहित्य संपादा में इस विषय का महत्व बढ जाता है |

मानवीय जीन मे सामाजिक, राजनैतिक धार्मिक, आध्यात्मिक हो सभी क्षेत्र मे एक मार्गदर्शक तत्व और प्रेरणातत्व, विद्यमान होते है जो मनुष्य इन्ही प्रेरणातत्व मार्गदर्शक तत्वों के अनुसार ही जीवन जीता है वही प्रेरणा, मार्गदर्शन या आदर्शतत्व महान जीवन चरित्तार्थ में होते है | इन्ही जीवन चरित्तार्थ का आधुनिक युग मे नई रुप मे जीवनीपरक उपन्यासों के माध्यम से आयी और जीवनीपरक उपन्यासों मे आयी हुई प्रेरणातत्व, आदर्शतत्व, मार्गदर्शक तत्व आजके आधुनिक मानव के अनेक समस्याओं को सुलझ ाने में और जीवन पथदर्शक के रुप में महत्व पुर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहे है, इसी लिए हिन्दी जीवनीपरक उपन्यासो मे निहित प्रेरणातत्व, आदर्शतत्व मार्गदर्शक तत्व सांस्कृतीक तत्व के आलोक मे इस शोधकार्य का महत्व एवं प्रासंगीकता है |

स्वतंत्रता के उपरान्त व्यवस्था के प्रति जो मोह भंग हुआ उससे भी आधुनिकता का विकास हुआ दिखाई देती है और आधुनिकता के उपरान्त जो मनुष्य मे जो बदलाव आए उसमें अनेक समस्याओंका उद्‌भव हुआ दिखाई देती है उसमें-संत्रास, अकेलापन, अजनबीपन, मृत्युबोध, आत्मनिर्वासन, व्यर्थता, स्वार्थ, अनिश्चितता, असंमजयता, रिक्तता बोध, आदि समस्याओं का उद्‌भव हुआ | आधुनिकता के पुर्व जब हम ऋषी, महर्षी, संत और आदर्श चरीत्रों के जीवन देखते है तो उन्हके जीवन में स्वार्थ से स्थानपर प्रेम, अनिश्चिता के स्थानपर निश्चितता, असंमजस्थता के स्थानपर संमजस्यता दिखाई देती है आधुनिक अनेक समस्याओं का मार्गदर्शन जीवन चरितातत्र, जीवनी, सबसे लोप्रिय विधा जीवनीपरक उपन्यासों के माध्यम से कल्पना के पंखो और जीवनी के यथार्थता का संगम कर पाठकों के रुची अनुरुप जीवनीपरक उपन्यास आधुनिक युग में प्रासंगिक सिध्द हुए दिखाई देते है | और इन्ही जीवनी परक उपन्यासो का अनुशीलन करना, आदर्श मानवीय चरित्रें के द्वारा आधुनिक समस्याओं और

आधुनिक बिखरते मानव को पथ प्रदर्शक के रुप में जीवनी परक उपन्यासों को आईने की तरह दिखाना इसी में मेरे विषय का महत्व एवं उसकी प्रांसगिकता सम्मीलित है |

विषय की पुर्वपिठिका :-

गद्य मे आज उपन्यास विधा अधिक लोकप्रिय है | इसी वजह से वह व्यापक भी बन गई है | इसलिए उपन्यास विधा पर अनेक शोध - कार्य हुए हैं | उपन्यास के स्वरुप, विषय वर्गीकरन, तात्विक विवेचन आदि दृष्टी से उपन्यासों का अध्ययन हुआ है | कितु २१ वी सदी के जीवनी परक उपन्यास को लेकर शोध-अध्ययन नही हुआ | इसलिए मैने २१ वी सदी के चुनिंदा उपन्यासो का समय -सीमा की दृष्टी से महत्व रखते हुए उनका अनुसंधान करने का निर्धार किया है | अत: मेरा यह कार्य अपने आप में मौलिक सिध्द होगा |

शोध - विषयक की व्याप्ति :-

शोध विषय को अध्ययन की दृष्टी से पाँच अध्यायों में विभाजित किया है

प्रथम अध्याय :- जीवनीपरक उपन्यास का उद्‌भव और विकास

द्वितीय अध्याय :- उपन्यास और जीवनी का तात्विक विवेचन

तृतीय अध्याय :- २१ वी सदी के पुर्व सृजित जीवनीपरक उपन्यासों का सिंहावलोकन

चतृर्थ अध्याय :- २१ वी सदी के जीवनीपरक उपन्यासों का अनुशीलन

पंचम अध्याय :- ^¨ÖÃÖÆÖ¸¡

शोध - अध्यायों का विश्लेषन :-

प्रथम अध्याय :- जीवनीपरक उपन्यास का उद्‌भव और विकास

हिन्दी जीवनीपर उपन्यास हमेशा से ही उपेक्षित रहा है | इसलिए इस अध्याय में जवीनीपरक उपन्यास का उद्‌भव कहा से हुआ और उनकी २१ वी सदी तक की यात्रा में उनका कैसा विकास हुआ ? इसका विवेचन एवं विश्लेषण इस शोध अध्याय में किया जायेगा |

द्वितीय अध्याय :- उपन्यास और जीवनी का तात्विक विवेचन

किसी भी साहित्य की विधाओं के उनके अपने तत्व होतें है अत: उनके आधार पर ही वे विधाएँ निर्भर होती है | अस्तु, उपन्यास और जीवनी इन दोनों विधाओं के भी अपने तत्व है | इन तत्वों का अध्ययन इस अध्याय में किया जाएगा |

तृतीय अध्याय :- २१ वी सदी के पुर्व सृजित हिन्दी जीवनीपरक उपन्यासों का सिंहावलोकन

जीवनीपरक उपन्यास को लेकर अनेक लेखको ने लेखन किया है | उसमें राघेय रांघव, आमृतलाल नागर, इकबाल बाहदूर, देवसरे, चतुरसेन शास्त्री, वृन्दावनलाल वर्मा, हजारी प्रसाद द्विवेदी आदि अनेक लेखकोंने जीवनी परक उपन्यास को लेकर लेखन किया है | इन सभी के २१ वे सदी के पूर्व सृजित जीवनीपरक उपन्यासों का विवेचन-विश्लेषण इस अध्याय में किया जायेगा |

चतृर्थ अध्याय :- २१ वी सदी के जीवनीपरक उपन्यासों का अनुशीलन

जीवन-चरित्र जीवन की ऐतिहासीक घटनाओं का स्थूल साहित्यिक उल्लेख नही है | जीवनी साहित्य एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन हैं | इस मनोवैज्ञानिक अध्ययन का अविष्कार जीवनीपरक उपन्यास है | २१ वी सदी के पूर्व भी इस साहित्य का लेखन हुआ है २१ वी सदी में भी इस साहित्य का लेखन हो रहा है | अतः इस अध्याय में २१ वी सदी के जीवनीपरक उपन्यासों का अनुशीलन जीवनी एवं उपन्यास के तत्वो को केंद्र मे रखकर किया जाएगा |

1) **रंग राची (२०१५) सुधाकर अदीब, लोकभारती प्रकाशन.**
2) **महामोह (२०१४) प्रतिभा राय, राजकमल प्रकाशन.**
3) **दया की देवी (२०१५) राजेन्द्र रत्नेश, राजकमल प्रकाशन.**
4) **वीरांगना झलकारीबाई (२००९) मोहनदास नैमिशराय.**

पंचम अध्याय :- ^¨ÖÃÖÆÖ¸|

इस अध्याय में समग्र शोध - कार्य का संक्षिप्त प्रारुपन प्रस्तुत किया जायेगा |

मुल ग्रंथ :-

1) **रंग राची (२०१५) सुधाकर अदीब, लोकभारती प्रकाशन.**
2) **महामोह (२०१४) प्रतिभा राय, राजकमल प्रकाशन.**
3) **दया की देवी (२०१५) राजेन्द्र रत्नेश, राजकमल प्रकाशन.**
4) **वीरांगना झलकारीबाई (२००९) मोहनदास नैमिशराय.**

संदर्भ ग्रंथ :-

1) डॉ.रविदत्त कौशिक - हिन्दी के जीवन चरितात्मक उपन्यास साहित्यका सांस्कृतिक संदर्भ, दीपू प्रकाशन दिल्ली.

2) नवनीत आर. ठक्कर - हिन्दी के जीवन परक उपन्यास, शान्तीप्रकाशन आसन, जिल्हा रोहतक.

3) अंजनी गुप्ता - हिन्दी साहित्यकारो पर आधारित जीवनीपरक उपन्यासे का उद्‌भव और विकास, साहित्यशिल्प प्रकाशन लखनऊ.

4) डॉ.शशिभुषन सिंहल - उपन्यास का स्वरुप, आधुनिक प्रकाशन दिल्ली.

शोध-निर्देशिका

प्रा.डॉ.प्रतिभा येरेकार
सहयोगी प्राध्यापिका एवं हिंदी विभागाध्यक्ष,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
धर्माबाद जि.नांदेड

शोधकर्ता

बोलचटवार नागेश दिगांबर
स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विद्यापीठ,
नांदेड